faciunt quae in cap. 22. leguntur: यदा परीक्षिता सर्वे श्रीमङ्गागवतं मुदा। श्रुत्वा सम्नाहमात्रेण मुक्तो नेवात्न संज्ञयः ॥१२॥ Quibus vides Bhágavatapuráṇam illud, Vopadevae tributum, laudari. Non igitur ante seculum tertium decimum liber scriptus est.

Codex intra annos 1770-80 non satis accurate exaratus est. (Walker 160.)

127.

Foll. 104-190. Linn. 11. Laghuṣivapuráṇam, Ṣivapuráṇam minus, praecedentis libri epitome, capita 25. continens. (B.) Versus plerique iidem sunt, quae vero in recensione majore levioris momenti vel superflua esse videbantur, omissa sunt. Capita vero 21-24. huic epitomae propria sunt. Atque quae inter recensionem utramque ratio intercedat, hac tabula apparebit:

A. Capp. 1-3 = B C. 1, 2. A. 4. A. 5-8 = 3. A. 9 = 4. A. 10, 11 = 5. A. 12, 13 = 6. A. 14, 15 = 7. A. 16 - 19 = 8. A. 20 = 9. A. 21. A. 22 = 10. A. 23 = 11. A. 24 = 12. A. 25 = 13. A. 26 = 14. A. 27 = 15. A. 28 = 16. A. 29 = 17. A. 30 = 18. A. 31 = 19. A. 32 = 20. A. 33 = 21.

Capita 22-25, quibus Páṣupatarum doctrinae breviter traduntur, e libello Ṣivagítá dicto (n. 61), excerpta, iisdemque verbis concepta sunt.

Haec voluminis pars anno 1770 exarata est. In fine haec leguntur: लखावितं गुसांईश्रीपशिवरामगिरमुतगोविंदगिरेख इदं श्रीलघुशिवपुराणं श्रीकृष्णापेणबुध्या व्यासश्रीपतुलशीमृतभूदेवस्य दत्तदत्तं॥ (WALKER 132^d.)

128.

Hujus voluminis folia 124-202. eandem Brahmotta-rakhandae epitomen capitibus 22. continent. (C.) Atque capita 1-17. a codice B. non discrepant, sed inde a capite 18. ordo paulum inversus est. Cap. 20. B. = 18. C. cap. 21. B. = 19. C. capp. 18, 19. B. = 20, 21. C. Denique caput 22. codicis C., quod in codice B. desideratur, a capite 34. cod. A. non differt.

Haec pars hujus seculi initio exarata est. (WILSON 104^b.)

129.

Lit. Bengal. Charta Ind. Foll. 258. Long.15. Lat. $4\frac{1}{2}$. Linn. usque ad fol. 210. 9, postea plerumque 10.

Hoc codice Sivapuránae partes tres continentur.

I. Foll. 1-106. *Uttarakhanda*. Capp. 36. Taṇḍis cum Vámadeva colloquitur. Incipit: नारायर्थं etc. ॥१॥ वागीशो दिख्णाङ्गादजिन मधुरिपुर्वामतो यस्य वेथा वाहोयों वे मुनिन्द्रैरवनतहद्येगीयते (१. मुनीं दे०) सामगानेः । गीर्श्वानाः (गीर्वाणाः) शक्रमुख्या(ः) दितिसृतसिहता नो विदुर्यस्य रूपं यः कर्ता पाति हर्त्ता सकलजगदिदं शंभवेऽस्मै नमोऽस्तु ॥२॥ पुख्याः पापिविनिर्मुक्ता नैमिपारखवासिनः । मुनयः सिद्धिसंकट्याः मूतं पप्रच्छरादरात् ॥३॥ मुनय जचुः ॥
अस्माभिः शिवमाहात्म्यं पुख्यच्च सश्चतं वहु । इदानीं गुणकम्मीनि पुनबूहि विशेषतः ॥४॥ अमृताष्पायिनां (१. amritapáyinám) नृणां
सन्तोषो नैव जायते । गावस्तृणिमवारखे प्रार्थयिन नवं नवं ॥५॥ सृत
उवाच ॥ धन्या वो मितस्त्यत्रा शिवे परमकारखे । यन्नामस्तृतिमाल्लेख
पापिनो मुक्तिभाजना[ः] ॥६॥ पाराशस्त्रीमसीपे तु यदृष्टं यःश्रुतं पुरा ।
मथाहं (tatháham) तद्वदिष्पामि स्वश्ल्या व्याससस्ततात् (°संमतात्) ॥९॥ etc.

Singulis capitibus hi tituli subscripti sunt. 1. Bhrigvádisamvádas. 2. Taṇḍi-Vámadevasamváde lingotpattis. 3. Lingamáhátmyam. 4. Dvádasajyotirlingáni. 5. Tripuravadhe Brahmádínám Himavadgamanam. 6. Tripuravadhopáye Ṣankaravákyam. 7. Tripuravadhas. 8. Sivadevatásamvádas. 9 (fol. 21ª). Dakshaputríviváhas. 10. Dáksháyanyagnipravesas. 11. Dakshayajnavidhvansanam. 12. Brahmamrigavadhas. 13. Umotpattis. 14. Kandarpadahanam. 15. Rativaradánam. 16. Umávaradánam. 17. Gauríviváhas. 18. Tárakavadhas. 19 (fol. 47 b). Gaņesotpattis. 20. Tirthayátrá. 21. Nandikeşvarotpattis. 22. Manikarnikámáhátmye Gangotpattis. 23. Váránasímáhátmyam. 24. Antargrihayátrá. 25. Váránasímáhátmye Panchakrosíyátráyám Mahákálaganotpattis. 26. Kírtivásásuravadhas. 27. Vinduhradot-28. Rásakrídá. 29. Tribhuvanesvaráshtottapattis. ranámasatam. 30 (fol. 82 b). Ekásravanamáhátmyam. 31. Varáhaprasádas. 32. Amritamanthane devánugrahe vishapánam. 33. Márkandeyaprasáde mrityunjayas. 34. Sivarátrimáhátmye Nishádamuktis. 35. S. Krishnasarmavimuktis. 36. Chaturdasívratam.

II. Foll. 107—229. Inánakhanda. Capp. 56. Haec pars a Sanatkumára cum viris sanctis communicata esse dicitur. Incipit: प्रपद्ये देवमीशानं सर्वे कमपराजितं। सम्भवं सर्वे भूतानामनादिं सर्वेतामुखं ॥१॥ वेदादी यः खरः प्रोक्त श्रोंकाराख्यो महेश्वरः। मृजते सर्व्वभूतानि पन्तमृक्तिः सदाशिषः ॥२॥ सांख्यानां परमं योगं व्रतं पाशुपतं तथा। सर्वे क्षानस्य कर्व्वारमादिदेवमुमापितं ॥३॥ मृजते भगवान् सर्वे मृत्तिं त्यविकारवान्। रक्षणार्थं स जन्तूनां विध्यातां मृजते भगवान् सर्वे मृत्तिं त्यविकारवान्। रक्षणार्थं स जन्तूनां विध्यातां मृजत्याः ॥४॥ स संज्ञां याति भगवानेक एव महेश्वरः। विलोको हितरह्यार्थी नित्यमुक्तः शिवोऽव्ययः ॥५॥ प्रज्ञलनं महाशूलं घोररूपं महाशनं। नानाक्रीडनकेदेवः क्रीडतो (क्रीडते) योगमायया॥६॥ दियतार्वे वपुः कृत्वा नृत्यारम्भे स्थितो हरः। जगित्यितिच कुरूते लोकस्यानुग्रहः शिवः ॥९॥ तस्य चिनाप्रभावेन न तस्याविदितं जगत्। तद्वत्वा संप्रवस्थानि पुराणं शिवभाषितं॥६॥ etc.

Cap. 1. Procemium. 2. De libri argumento. 3. De